

सुरक्षा, स्वास्थ्य व मनोरंजन के संदर्भ में अस्त्र-शस्त्र और संगीत का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Vinod Saroha*

(Maharishi Dayanand University, Rohtak) Village-Khanpur, District-Hisar, Haryana-125033

शोध सार: - मानव ने आविष्कारी और खोजी सोच विकसित होने पर भोजन व सुरक्षा हेतु समूहों में रहने के साथ पत्थरों के प्रयोग के बाद भाले, बाड़ आदि बना लिए थे। इसके साथ झरने, बूंदों, हवाओं, पक्षियों, पशुओं, कंकर-पत्थरों के लुढ़कने-गिरने आदि की आवाजों से मनोरंजन होने पर विभिन्न प्रकार की शृंगारित ध्वनियों का आनन्द लेने के साथ इन पर शोध करना शुरू किया तो नए-नए प्रयोगों के परिणाम स्वरूप परिष्कृत हुए 'संगीत' से मनोरंजन के साथ शरीर-मन की सुरक्षा और रोगोपचार कार्य भी समयानुसार हुए। तकनीकी विकास बढ़ने पर कुछ लोगों ने मनुष्यों के समूहों, राजीय-राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर विवाद खड़े कर लिए, जिस कारण विभिन्न वर्ग-सम्प्रदायों, देशों में विवाद के साथ नरसंहार भी बढ़ रहे हैं। बहुत दिनों से हालात ऐसे भी बदले हैं कि मनुष्य ने हथियारों को मनोरंजन के तौर पर भी इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, जिसके नुकसानदायक परिणाम हुए हैं। अतः 'विकास' की बजाय 'विनाश' को आमंत्रण देते बढ़ते हुए अत्याधुनिक हथियारों, बमों आदि पर किया जाने वाला अत्यधिक खर्च 'सुरक्षा' को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से 'समस्या' में बदल रहा है, जिस खर्च को नियंत्रित कर 'मनोवैज्ञानिक स्वस्थ सोच' के विस्तार पर खर्च बढ़ाने की अधिक आवश्यकता है, ताकि जीवन प्राकृतिक ही पूर्ण हो।

मुख्य शब्द: सुरक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, अस्त्र-शस्त्र व संगीत।

-----X-----

उद्देश्य:

आने वाली पिढ़ियों के लिए जीवन अनुकूल माहौल बचाने हेतु अस्त्र-शस्त्रों से हो रही एकल हत्या-आत्महत्या व नरसंहारों पर नियंत्रण के लिए हथियारों की अनियंत्रित होती होड़ में किए जाने वाले अत्यधिक खर्च को नियंत्रित कर शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन के लिए प्रयोग करने के वैज्ञानिक व मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का संदेश संचार करना।

विषय विस्तार:

खोजी व आविष्कारक सोच उत्पन्न होने पर मानव ने सुरक्षा व पेट भरने के लिए पत्थर, डंडे, भाले आदि को अस्त्र-शस्त्र के रूप में अपनाया-बनाया होगा। तात्कालीन अस्त्र-शस्त्र का यह दौर ऐसा शुरू हुआ कि एके47 जैसी राईफलों के आविष्कार व परमाणु हमलों के बाद आज मनुष्य हाइड्रोजन और रसायन बम भी लिए खड़ा है व एक-दूसरे को दिखाने, डराने या मारने की होड़-सी मची हुई है। इसके विपरीत संगीत ब्रह्माण्ड के निर्माण के साथ ही उत्पन्न हुआ है, जो जीवन के लिए आवश्यक भी है।

लेकिन अतिभयानक अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार कुछ वर्षों पहले ही हुआ है, जिसके भयानक परिणाम आए हैं। भौतिक रूप से प्रारम्भिक स्वरूप का संगीत हवा, जल, पत्थरों आदि के विभिन्न रूप जैसे- तेज हवाओं, बूंदों, झरनों, झालों, कंकर-पत्थरों आदि के बहने-लुढ़कने-गिरने से बनती सांय-सांय, टिप-टिप, धम-धड़ाम् जैसी विभिन्न प्रकार की ध्वनियों से व जीव-जन्तुओं आदि की चीं-चीं, चटर-पटर, पिहाओं, मियाउं जैसी ध्वनियों से प्राकृतिक ही पैदा हुआ है (संगीत शास्त्रीयों ने देवी-देवताओं के द्वारा भी संगीत के स्वरों व रागों आदि का निर्माण किया लिखा है)। फिर मानव ने पूर्वोक्त ध्वनियों को पहचान-परिष्कृत कर लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत आदि के रूप में अपने-अपने अनुकूल लिया, जो आज विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में मुख्यतः सात स्वरों के माध्यम से मनोरंजन के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक रिश्ते सुधारने-बनाने, गणित-विज्ञान विषय में प्रयोग होने के साथ रोगोपचारादि के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

रिवालवर/मिसाइलों से निकली गोली/गोलों व संगीत वाद्य/गले से निकले स्वरों/बोलों से बिल्कुल विपरीत क्रिया

होती है। रिवालवर से जब गोली निकलती है तो कहीं-न-कहीं चलाने वाले को खुद भी भय रहता होगा। परन्तु एक संगीतकार को यह आशा व चाव रहता है कि उसके द्वारा लगाए जाने वाले स्वर सुनने वालों को चर्म तक मधुरता दे पाएंगे! इसका ताजा एक उदाहरण है कि 'कई दिनों से बिमार 21 वर्षीय संगीता दास कोलकाता के एसएसकेएम अस्पताल में भर्ती थी, जिनको डॉक्टर संदीप कुमार ने म्यूजिक थेरेपी के रूप में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रसिद्ध वायलिन वादिका एन. राजम के राग दरबारी कान्हड़ा को दिन में तीन बार सुनने की सलाह दी। संगीता के परिवार ने बताया कि ऐसा करने पर बिमार महिला कोमा से बाहर आ गई। पद्म पुरस्कार से सम्मानित संगीतकार एन. राजम ने यह खबर सुनकर कहा कि मैंने बहुत पैसा कमाया है, कई अवार्ड जीते हैं, लेकिन कभी सोचा नहीं था कि मेरा वायलिन बजाना किसी को जिन्दगी दे सकता है। मैं अपनी भावनाएं शब्दों में बयान नहीं कर सकती हूँ। मैं संगीता के पूरी तरह स्वस्थ होने पर उससे मिलूंगी और उन डॉक्टरों से भी, जिन्होंने उसे यह सलाह दी थी। दरअसल, संगीता का इलाज कर रहे कार्डियक ऐनिस्थीसिया स्पेशलिस्ट डॉ. संदीप कुमार खुद भी एक वायलिन वादक हैं।'[1]

एक-दूसरे देशों के आपसी विवादों के लिए तैयार किए जा रहे खतरनाक अस्त्र-शस्त्रों के गुण-दोषों पर आती खबरों से पता चलता है कि एके47 राईफल की नई-नई शृंखलाएं आ रही हैं, अमूक टैंक, मिशाइलें 2000 या 5000 किलोमीटर दूर तक बम बरसा सकते हैं। कई देश परमाणु आदि बमों का परीक्षण करके बैठे हैं व कई ऐसी तैयारी कर रहे होंगे। लेकिन एके47 बनाने वाले ने खुद भी स्वीकारा था कि इसका दुरुपयोग होगा। और, जब विश्व युद्धों में प्रमाणु बम गिराए गए, तब तो गिराने वाले भी खुश होकर प्रितिभोज आदि करते बताए जा रहे हैं, परन्तु अब खबरें मिल रही हैं कि वे अफसोस से भर चुके हैं। जहाँ परमाणु बम गिराया गया था वहाँ अतिभयानक मंजर था, इस पंक्ति के लिए यूट्यूब लिंक संदर्भ पर बम बरसने की विडियो भी डाली गई हैं।[2] कि वहाँ अपंग बच्चे पैदा होने आदि की समस्याएँ भी हुई हैं और कहीं-कहीं पर तो घास उगना भी बंद हो गई थी। इसके अतिरिक्त बमों से निकलते धुएं व गैसों से कई वर्षों तक वातावरण प्रदूषित रहता है, जिसका स्वास्थ्य पर बुरा असर होता है।

अस्त्र-शस्त्रों के विपरीत, राग-रागनियों को मानव की मनोदशा एवम् भावनाओं को ध्यान में रखकर समय, मास, ऋतु, रस आदि की प्रकृति से जोड़कर बनाए गए हैं। इसलिए शृंगार, वीर, हास्य, करुण, रौद्र, वीभत्स, अदभुत और शांत आदि रसों की विशेषताओं से निबद्ध राग रचनाओं के कारण 'संगीत' में

रोगोपचार शक्ति भी है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में संगीत द्वारा रोगोपचार का वर्णन आयुर्वेद को आधार मानकर ही किया गया है। आयुर्वेद में 'वात', 'पित्त', 'कफ' तीन दोष मानव शरीर में व्याप्त व्याधियों से सम्बंधित बताए गए हैं। वात, पित्त, कफ की सुचारु स्थिति से शरीर स्वस्थ रहता है। वात, पित्त, कफ में से 'वात' मुख्य है। क्योंकि 'पित्त' और 'कफ' दोनों 'वात' के सहयोग से क्रिया करते हैं। 'वात', 'पित्त', 'कफ' के विकार का समय क्रमशः शाम, सुबह और दोपहर माना गया है।[3] इसके साथ, ऐसा भी माना जाता है कि उचित आवंटित समय पर रागों के प्रदर्शन या श्रवण से मानव शरीर प्रभावित होता है जिसके स्वर, कुछ राग एवम् उनके स्वभाव-प्रभाव कुछ अग्र प्रकार से पहचाने गए हैं:

01. 'षडज' का ठण्डा स्वभाव चित को शांत करने वाला है इसलिए यह गर्म व तेज प्रवृत्ति 'पित्त' विकार के दोषों को दूर करता है।
02. 'ऋषभ' स्वर का स्वभाव खुशक व ठण्डा है, जो गर्म व नम गुणधर्म वाले 'पित्त', 'कफ' प्रधान रोगों को दूर करने में सहायक बताया गया है।
03. 'गंधार' स्वर का स्वभाव करुणाजनक है और रंग नारंगी के समान है जो पित्त रोगों को दूर करता है।
04. 'मध्यम' स्वर की प्रकृति चंचल है व रंग पीला और गुलाबी बताया है व स्वभाव नर्म एवम् खुष्क है अतः यह 'वात' और 'कफ' रोगों को दूर करता है।
05. 'पंचम' स्वर का रंग लाल है तथा स्वभाव जोषीला है जो कफ प्रधान रोगों को दूर करता है।
06. 'धैवत' स्वर का रंग पीला तथा स्वभाव प्रसन्नता तथा उदासी दोनों ही है यह 'वात' प्रधान रोगों को दूर करता है।
07. 'निषाद' स्वर का रंग लाल तथा प्रकृति जोशीली है, चित को प्रसन्न करने वाली है जो 'वात' प्रधान रोगों को दूर करती है।[4]

कुछ रागों का प्रभाव:

01. राग काफी - एक नम 'शांत' सुखदायी और गहरे मूड का उदाहरण देते हैं।

02. राग पूरिया धनाश्री - मधुर गहरे भारी बादल जैसे स्थिर मस्तिष्क का उदाहरण देता है और अमलता को कम करता है।
03. राग भूपाली एवम् तोड़ी - उच्च रक्त-चाप वाले मरीजों को जबरदस्त आराम मिलता है।
04. राग बागेश्वरी - माइग्रेन जैसे सिरदर्द के इलाज में सहायक।
05. राग बिहाग काफी और खमाज - अनिद्रा से मुक्ति आदि।
06. राग मल्हार - दमा एवम् लू लगने से आराम।
07. राग शिवरंजनी - स्मरण-शक्ति तीव्र बनाने में सहायक।
08. राग भैरवी - टी.बी. कैन्सर, सर्दी, कफ, साइनस एवम् दांत के दर्द से निवारण में सहायक।[5]
09. राग भैरव - कफ बढ़ने से हुए रोगों को ठीक करता है।
10. राग आसावरी - रक्त, वीर्य, कफ इत्यादि के रोगों को दूर करता है।
11. राग दरबारी - हृदयशूल, हृदय रोग तथा गठिया रोग दूर करता है, आदि।[6]

लय, ताल का रोग निवारक रूपः

‘उचित लय, ताल में बंदिष पूर्ण कार्य करती है। ‘संगीत विषारद’ ग्रंथ के लेखर ‘वसंत’ के अनुसार वात प्रकृति के रोगों को दूर करने के लिए करुण रस प्रधान या शान्त रस प्रधान तालों का चयन किया जाना चाहिए, जैसे रूपक अथवा झूमरा ताल। कफ प्रकृति प्रधान रोगों को दूर करने के लिए वीर रस प्रधान तालों का चयन किया जाना चाहिए जैसे - रुद्र ताल, चैताल आदि। ताल के साथ उसकी लय का भी विशेष महत्व है। एक ही ताल अलग-अलग लय में बजने पर अलग-अलग रस उत्पन्न करती है। जैसे चारताल जहाँ मध्य लय में बजने पर भयानक रस उत्पन्न करती है वहीं द्रुत लय में बजने पर वीर रस तथा द्रुत लय में बजने पर रौद्र रस उत्पन्न करती है।

डॉ. जैक्सन पॉल ने अपनी पुस्तक ‘संगीत चिकित्सा’ में लय चयन पर लिखा है कि यदि ‘पित्त’ प्रकृति का रोग हो तो ताल की गति धीमी होनी चाहिए, इससे रोगी की नाड़ी की गति सामान्यावस्था में आ जाएगी और हृदयगति ठीक हो जाएगी।

वायु प्रधान रोगों में भी ताल की गति धीमी होनी उचित है। केवल कफ जन्य रोगों में ताल की गति चंचल रखें इससे रोगी के रक्त संचार में वेग आएगा।[7]

संगीतकारों और वैज्ञानिकों के संगीत प्रभावः

भारतीय शास्त्रीय संगीत गायक पंडित औंकार नाथ ठाकुर के अनुसार “सॅर जे. सी. बोस जिन्होंने वनस्पति शास्त्र पर अनुसंधान कर आधुनिक युग को यह प्रमाणित कर दिखाया कि वनस्पति में भी जीव है, उनकी प्रयोगशाला में ‘भैरवी’ हमने गाई थी। गाने के पूर्व यंत्र द्वारा पौधों की पत्तियों की अवस्था देखी गई और गाने के बाद उन पत्तियों पर आई चमक का भी दर्शन किया था।”[8]

‘वैज्ञानिकों का दावा है कि गायन तनाव घटाने और पार्किंसन बीमारी के लक्षणों को कम कर सकता है। संगीत थैरेपी एकदम दवा लेने के समान ही है। अमेरिका को आयोवा स्टेट युनिवर्सिटी के अनुसंधानकर्ताओं ने गायन समूह में 17 प्रतिभागियों के हृदय गति, रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल स्तर को मापा। प्रतिभागियों की उदासी, बैचेनी, खुशी और गुस्से की भावनाओं की रिपोर्ट को देखा गया। इस तरह का डाटा संग्रह गायन के पहले और गायन सत्र समाप्त होने के एक घंटे बाद किया गया। युनिवर्सिटी में सहायक प्रोफेसर एलिजाबेथ स्टेगेमोले ने कहा, “हमने हर हफ्ते सुधार देखा जब वे गायन समूह छोड़ रहे थे। हमने देखा कि वे बेहतर महसूस करते रहे थे और उनकी मनोदशा उच्च स्तर की रही।” उन्होंने कहा, “उंगलियों के संचालन और चाल जैसे कुछ लक्षणों में सुधार आ रहा था जिनमें दवाओं से सुधार नहीं आ रहा था लेकिन गायन से इसमें सुधार आया।” यह पार्किंसन रोग से सम्बंधित अपनी तरह का पहला अध्ययन है जिसमें देखा गया कि हृदय गति, रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल को गायन किस प्रकार प्रभावित करता है। तीनों में ही गिरावट देखी गई।”[9]

‘भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर में शास्त्रीय संगीत की विभिन्न राग-रागनियों पर शोध में राग दरबारी ने चैंकाने वाले नतीजे दिए हैं। मस्तिष्क की नेटवर्किंग पर राग-रागनियों से पड़ने वाले असर पर शोध किया जा रहा है। दस मिनट राग दरबारी सुनने के बाद दिमाग के न्युरॉस तेजी से सक्रिय हुए और दिमाग को एकाग्र किया। इससे सोचने-समझने की क्षमता बेहतर हुई और दिमाग तेजी से निर्णय लेने की स्थिति में था। आईआईटी कानपुर के मानविकी और समाज विभाग के प्रोफेसर बृजभूषण, विधुतीय अभियंता विभाग के प्रोफेसर लक्ष्मीधर बेहरा और शोधार्थी आशीष गुप्ता इस शोध दल में शामिल

हैं।[10] अर्थात् राग, गीत, धुनों व तालों आदि को सुनने-सुनाने व गाने-बजाने पर मनोनंजन के साथ रोगोपचारात्मक प्रभाव भी होता है।

जहाँ हथियार रखना खर्चीला होने के साथ बिना अधिकार लिए रखना कानूनी अपराध में भी आता है, वहाँ संगीत कोई भी व्यक्ति सामाज्य अनुसार मुफ्त में भी सुन या कर सकता है।

‘जहाँ हथियारों को देखने मात्र से भी कहीं न कहीं मानव के मन में डर आता है वहाँ सांगीतिक वाद्य जब किसी को दिखता भी है तो चेहरे पर मुस्कान आती है। लेकिन एके47 देखने पर तो सामने वाला कुछ बोल ही नहीं पाता।’[11] उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत हैं सितार वाद्य, वादक बनाम एके47 हथियार के फोटो:



बनाम



जहाँ हथियारों से दिनो-दिन नरसंहारों की खबर आती है वहीं संगीत में वह ताकत है कि निरूत्साहित व्यक्ति के विचार भी बदल दे। उदाहरण के तौर पर सन् 1970 में आई फिल्म ‘सफर’ का गीतांश प्रस्तुत है जिसके गीतकार हैं इंदिवर, गायक मन्ना डे, संगीतकार कल्याणजी-आनन्दजी हैं:

नदिया चले, चले रे धारा, चंदा चले, चले रे तारा

तुझ को चना होगा, तुझ को चलना होगा

जीवन कहीं भी ठहरता नहीं है

आँधी से, तूफां से डरता नहीं है

तू ना चलेगा तो चले तेरी राहें

मंजिल को तरसेगी तेरी निगाहें

तुझ को चलना होगा।।[13]

जहाँ हथियारों को शादि आदि अवसरों पर मनोरंजन के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है वहाँ बहुत भयानक परिणाम भी आए हैं। इसके विपरीत संगीत का जन्म-शादी-मृत्यु आदि संस्कारों के अवसरों के अनुकूल गीत-संगीत प्रचलित भी हैं, जो भावानुकूल रस प्रदान करने में सक्षम हैं।

अतः जीवन मरो या मारो के लिए नहीं बल्कि ‘जियो और जीने दो’[14] के लिए होता है, इसलिए प्रस्तुत विषय पर तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक महसूस हुआ।

निष्कर्ष:

बिल्कुल स्पष्ट है कि ‘तकनीक या ज्ञान’ विकास के लिए है विनाश के लिए नहीं। अतः अत्याधुनिक व अति महंगे अस्त्र-शस्त्रों पर किया जाने वाला अत्यधिक खर्च एक प्रकार का मनोविकार है, जो मानव सभ्यता को विनाश की ओर ले जा रहा है, जिसके उपचार के लिए अतिभयानक अस्त्र-शस्त्रों पर किए जाने वाले अतिखर्च को नियंत्रित कर ‘स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन’ पर खर्च करने की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पिढ़ियों के लिए वातावरण को जीने लायक बनाए रखा जा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

01. दैनिक भास्कर, 16.12.2018, रविवार, राष्ट्रीय समाचार पत्र, पानीपत संस्करण, संस्करण 66, पृष्ठ 12
02. <https://www.youtube.com/watch?v=NF4LQaWJRDg>, Hiroshima: Dropping the Bomb, Hear first-hand accounts from the air and ground, re-telling every memory from the day the world first witnessed the horrors of atomic warfare, BBC Studios, Published on Jul 24, 2007
03. शर्मा सुभाषिणी, संगीत-चिकित्सा-शास्त्रीय संगीत में निहित हिकित्सकीय तत्व, शोध प्रत्र,

- अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 17-18 फरवरी 2012, संगीत विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रोसीडिंग, पृष्ठ-171.
04. शर्मा सुभाषिनी, संगीत-चिकित्सा-शास्त्रीय संगीत में निहित हिकित्सकीय तत्व, शोध पत्र, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 17-18 फरवरी 2012, संगीत विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रोसीडिंग, पृष्ठ-171.
05. प्रिया, विभिन्न शरीरिक एवम् मानसिक रोगों की चिकित्सा में भारतीय संगीत का प्रयोग, संगीत एवम् तनाव से मुक्ति, शोध पत्र, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी, 17-18 फरवरी 2012, संगीत विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रोसीडिंग, पृष्ठ-366-67.
06. सिंह स्वाति, 'संगीत चिकित्सा' शोधपत्र, संगीत चिकित्सा राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 फरवरी 2009 की प्रोसिडिंग संगीत चिकित्सा, प्रकाशक -संगीत विभाग, दयानन्द गल्स (पी.जी.) कॉलेज, कानपुर, पृष्ठ – 276
07. नायर इच्छा, 'वैज्ञानिक तथा मनावैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति में संगीत की महत्वपूर्ण भूमिका', शोध पत्र, संगीत चिकित्सा राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 फरवरी 2009 की प्रोसिडिंग संगीत चिकित्सा, प्रकाशक -संगीत विभाग, दयानन्द गल्स (पी.जी.) कॉलेज, कानपुर, संस्करण 2010, पृष्ठ – 123-24
08. सिंह स्वाति, 'संगीत चिकित्सा' शोध पत्र, संगीत चिकित्सा राष्ट्रीय संगोष्ठी, 21 फरवरी 2009 की प्रोसिडिंग संगीत चिकित्सा, प्रकाशक -संगीत विभाग, दयानन्द गल्स (पी.जी.) कॉलेज कानपुर, संस्करण 2010, पृष्ठ – 276
09. प्रैस ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया (भाषा), समाचार पत्र, नई दिल्ली, 09.11.2018
10. दैनिक जागरण, दिनांक 02.12.2018, राष्ट्रीय समाचार पत्र, दिल्ली संस्करण, पृष्ठ नं. 9
11. सक्सेना, सुनील कान्त, सी-42, सैक्टर 22, नोएडा, उत्तर प्रदेश से साक्षात्कार
12. सक्सेना, सुनील कान्त, सी-42, सैक्टर 22, नोएडा, उत्तर प्रदेश से साक्षात्कार
13. <https://www.youtube.com/watch?v=xaxNurIcFXM>, Gaane Sune Ansune, Nadiya Chale Chale Yeh Dhara | Manna Dey | Safar 1970 Songs, Published on Jun 3, 2016
14. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी की मानवीय सीखों का मूल

Corresponding Author

Dr. Vinod Saroha*

(Maharishi Dayanand University, Rohtak) Village-Khanpur, District-Hisar, Haryana-125033

v9ds13@gmail.com